दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल में सामाजिक चेतना

प्रा.डॉ.सुचिता जगन्नाथ गायकवाड
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
वसुंधरा कला महाविद्यालय,
जुले सोलापुर (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में गज़ल विधा एक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। कवि दुष्यंत कुमार से पहले हिंदी ग़ज़ल विधा का रूप रोमानी और श्रृंगारिक था। सर्व प्रथम दुष्यंत कुमार ने गजल की लोकप्रियता देखकर उसे सामान्य आदमी के यथार्थ जीवन से जोड़ा है। ग़ज़ल को काव्य–रूप में प्रतिष्ठित करनेवाले प्रगतिशील कवियों में दुष्यंत कुमार का स्थान शीर्षस्थ है। दुष्यंत कुमार का जन्म 1 सितंबर, 1933 को उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में राजपुर नवादा नामक गाँव में हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। आकाशवाणी भोपाल में असिस्टेंट प्रोडयूसर के पद पर कार्य किया है। हिंदी विभाग भोपाल में सहायक निदेशक पद पर कार्यरत रहे।उनकी मृत्यु 30 दिसंबर, 1975 में हुई। दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल के अलावा हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपना बहुमोल योगदान दिया है। 'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेरे','जलते हुए वन का वसंत',साये में धूप' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। 'एक कंठ विषयायी' यह नाटक महत्वपूर्ण है। उनके प्रकाशित उपन्यासों में 'छोटे–छोटे सवाल','दुहरी–जिंदगी','आँगन में एक वृक्ष' प्रमुख उपन्यास हैं। उनका 'मन के कोण' यह एकांकी संग्रह काफी चर्चित रहा है।

प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख कवि दुष्यंत कुमार ने हिंदी ग़ज़ल विधा को नवीन चेहरा दिया है। उन्होंने ग़ज़ल को रोमानी और श्रृंगारिकता से निकालकर मनुष्य जीवन के यथार्थ से जोड़ा है। उनकी ग़ज़लों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, नैतिक विषयों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत हुआ है। उन्होंने आम आदमी में चेतना जगाने का कार्य किया है।

स्वतंत्रता के पश्चात देश की सामाजिक परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। राजनेताओं के द्वारा किए गए वादे झूठे साबित होने लगे थे। सामान्य जनता का मोहभंग होने लगा था। ऐसी परिस्थिति में आम आदमी अत्यंत निराश हुआ था। देश की जनता की इस मनःस्थिति को उजागर करते हुए दुष्यंत कुमार प्रस्तुत ग़ज़ल लिखते हैं,

''कहाँ तो तय था चरागाँ हर घर के लिए
कहाँ चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।''[1]

साहित्य और समाज का अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। साहित्य में समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति होती है।भारत पर अनेक वर्षों तक अंग्रेजों का शासन रहा। 15 अगस्त, 1947 को भारत अंग्रेजी शासकों की बेड़ियों से आजाद हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व सामान्य भारतीय लोग अंग्रेजों के अत्याचार से पीड़ित थे। स्वतंत्रता के बाद सामान्य जनता के मन में नविन आशा–आकांक्षाओं का संचार हुआ। लेकिन लोगों को भारतीय सरकार से निराशा मिल रही थी। आम जनता की रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या तक हल नहीं हो रही थी। मजदूर पूँजीपतियों द्वारा शोषित हो रहे थे। स्वतंत्र भारत की सामान्य जनता के यथार्थ जीवन का चित्रण करते हुए गजलकार दुष्यंत कुमार कहते हैं कि स्वतंत्रतापूर्व तो राजनेताओं ने जनता को सुख–सुविधाएँ देने का आश्वासन दिया था। लेकिन स्वतंत्रता के बाद उनके

द्वारा दिए गए आश्वासन झूठे साबित हुए।स्वतंत्रता के बाद भी देश की सामान्य जनता अत्यंत दयनीय अवस्था में जीवन जीती है। पूँजीवती वर्ग मजदूरों का शोषण करते हैं। दुष्यंत कुमार भारत की आम जनता की विपन्न अवस्था और सामाजिक परिवर्तन की अभिलाषा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं ।

''न हो कमीज तो घुटनों से पेट ढक लेंगे
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।''[2]

देश की सामान्य जनता को स्वतंत्र भारत की सरकार से कई उम्मीदें थीं। लेकिन सरकार की ओर से जनता के विकास के लिए कोई प्रयास नहीं हुए।राजनेता जनता को झूठे वादें कर चुनाव में जीतकर सिर्फ अपना स्वार्थ पूरा कर रहे थे। राजनेताओं का चरित्र भ्रष्ठ हो चुका था। स्वार्थान्ध राजनीति के कारण समाज का पतन हो रहा था। राजनीतिक समस्याएँ बढ़ गयी थीं। राजनेताएँ प्रजातंत्र के नाम पर सामान्य जनता का शोषण कर रहे थे। राजनेताओं के झूठे आश्वासन और स्वार्थी प्रवृत्ति की ओर जनता का ध्यान आकृष्ठ करते हैं। भ्रष्ट राजनीति तथा पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था के कारण भारत की आर्थिक समस्याएँ बढ़ गयी थी। भारत की सामाजिक समस्याएँ कम होने की बजाय बढ़ती ही जा रही थी। पूँजीवादी व्यवस्था के कारण समाज में शोषक और शोषित वर्ग निर्माण हुआ। दुष्यंत कुमार इस आर्थिक नीति का कटू विरोध करते हैं।

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था सड़ गयी थी। सामाजिक व्यवस्था के दूषित वातावरण का प्रभाव मनुष्य के नीजी जीवन पर भी पड़ रहा था। जिससे चारों ओर असंतोष नजर आ रहा था।स्वतंत्रता के पश्चात भारत का विकास होने की बजाय पतन होता जा रहा था।

''यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है
चलो यहाँ से और उम्र भर के लिए।''[3]

बौध्दिकता और विज्ञान के विकास के साथ मनुष्य विघटित हो रहा था। मनुष्य के जीवन में बनावटीपन आ रहा है। व्यक्ति स्नेहशून्य बन रहा था। उसमें भावुकता शेष नहीं रही। मनुष्य जीवन अत्यंत जटिल एवं गतिशील बन गया। मनुष्य यांत्रिक जीवन में गुलाम बन गया। सहानुभूति और सहिष्णुता की जगह उत्तेजना और तनाव बढ़ता जा रहा था।राजनीतिज्ञ जनता के सामने आदर्शवान नेता बनकर उन्हें झूठे आश्वासन देकर चुनाव में जीत जाते हैं। राजनीतिक पदों को प्राप्त करने के बाद लोगों के सामने विभिन्न प्रकार के मुखौटे धारण करते हुए अपनी कुर्सी सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं। राजनीतिज्ञों के छल–कपट, अधिकार लोलुपता और शोषण को सामान्य जनता समझ नहीं पाती हैं। दुष्यंत कुमार आम जनता को संबोधित करते हुए उन्हें राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था की वास्तविकता से सतर्क करते हुए लिखते हैं,

''मस्लहत आमेज होते हैं सियासत के कदम
तू न समझेगा सियासत, तू अभी इन्सान है।''[4]

राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार के कारण जनता में निराशा और पराजय की भावना देखकर दुष्यंत कुमार दुःख और दर्द से आक्रांत जनता को रिश्वत खोरी, भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार, सामाजिक और राजनीतिक कलुषित वातावरण से सजग करते हैं,

''यहाँ तक आते–आते सूख जाती हैं कई नदियाँ
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।''[5]

भारत के आर्थिक क्षेत्र में निर्माण हुई समस्याओं के कारण दुष्परिणामों का सामना करना पड़ा। सामान्य जनता को अन्न और वस्त्र की समस्याओं को सहना पड़ रहा था।अधिकार लोलुपता, सत्ता और धन प्राप्ति का लालच आदि के कारण राजनेता भ्रष्ट और अनैतिक बनकर सामान्य जनता का शोषण करते हैं। भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था से सामान्य मनुष्य पीड़ित था। आम जनता राजनेताओं के घातक भ्रम का शिकार बनी थी। राजनीतिज्ञ समाज के हितों को ध्यान में न रखकर अपने स्वार्थ की पूर्ति करने लगे थे। अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए राष्ट्र हित को दाँव पर लगाकर कईअपराध कर खुले आम घूम रहे थे।दुष्यंत कुमार इस स्थिति का पर्दा फाश करते हैं,

''इस सिरे से उस सिरे तक शरीके जुर्म हैं
आदमीया तो जमानत पर रिहा है या फरार।''[6]

सामान्य जनता अत्याधिक पीड़ित होकर भी सामाजिक परिवर्तन के लिए कोई प्रयास नहीं कर रही थी। दुष्यंत कुमार ने सामान्य जनता की इस स्थिति को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है,

''यहाँ तो सिर्फ गूँगे और बहरे लोग बसते हैं
खुदा जाने यहाँ पर किस तरह जलसा हुआ होगा।''[7]

दुष्यंत कुमार सामान्य मनुष्य को सामाजिक विड़ंबनाओं से मुक्ति के लिए विद्रोह के रास्ते पर चलने के लिए कहते हैं। दुष्यंत कुमार अपनी ग़ज़लों के माध्यम से जर्जर आर्थिक और सामाजिक स्थिति को देखकर अस्वस्थ होते हैं। वे सामान्य जनता को इस स्थिति के खिलाफ लड़ने के लिए कहते हैं। देश की सामाजिक दशा को सुधारने के लिए अन्याय का प्रतिकार करने की सीख देते है। सामान्य जनता को संकटग्रस्त स्थिति से उबरने के लिए मिलकर एक साथ लड़ने के लिए कहते हैं।

''एक चिनगारी कहाँ से ढूँढ लाओ दोस्तों,
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।''[8]

सामान्य जनता विभिन्न समस्याओं से जूझ रही थी। वह भ्रष्ट सामाजिक यंत्रणा के कारण संत्रास और घुटन को सह रही थी। दुष्यंत कुमार ने भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, अनैतिकता तथा विनाशकारी तत्वों का सफाया करने के लिए आम जनता को सामाजिक क्रांति के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं।

''मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
होकहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।''[9]

आम आदमी के जीवन में व्याप्त दिशाहीनता और जीवन की विड़ंबनाएँ बढ़ती जा रही थी।सामान्य जनता संशयग्रस्तता, व्यर्थता और संत्रास के कारण त्रस्त थी। ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार सामाजिक विसंगतियों से छुटकारा पाने के लिए सामाजिक विद्रोह की चेतना जगाते है।दुष्यंत कुमार देश की आम जनता को इस विसंगति को दूर करने के लिए प्रेरित करते हैं।सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था को बदलने के लिए सामाजिक क्रांतिका आवाहन करते हैं।

''सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।''[10]

राजनेताओं के लिए राजनीति मात्र एक पेशा है। देश की आम जनता के हृदय में असंतोष के कारण कुंठित लोगों को अपने से बाहर निकलकर विषम समाज व्यवस्था को परिवर्तित करने का संदेश देते हुए दुष्यंत कुमार कहते हैं।

''अब तो इस तालाब का पानी बदल दो,
ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।''[11]

➢ **निष्कर्ष :**

दुष्यंत कुमार एक प्रगतिशील, प्रयोगशील और रूझानशील ग़ज़लकार हैं। उनकी ग़ज़लों में सामाजिक चेतना का प्रमुख स्वर उभरता है। ग़ज़ल विधा के कारण उनका कद अत्यंत उँचा उठ गया है। दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में समकालीन यथार्थ जीवन का चित्रण दिखायी देता है। उनकी ग़ज़लों के कारण हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक चेतना की भावना प्रवाहित हुई है। उनकी ग़ज़लों में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना को देखकर डॉ. रणजीत लिखते हैं, **''प्रगतिशील जनवादी भाव और विचार सूत्रों से संग्रहित इन ग़ज़लों के अनेक शेर सूक्तियों और मुहावरों की तरह प्रबुध्द लोगों की जुबान पर चढ़ गए हैं।''**[12]दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में सामाजिक जीवन की समग्रता और जटिलता का सूक्ष्म अंकन हुआ है। उनकी ग़ज़लों में सामाजिक जीवन की वेदनापूर्ण परिस्थिति का संघर्षपूर्ण चित्रण दिखायी देता है। वे सामाजिक प्रगति की दृष्टि से अत्यंत दृढ़ता से लोगों में सामाजिक चेतना जगाते हैं। प्रगतिशील विचारधारा के कवि दुष्यंत कुमार सामाजिक विकास हेतु संघर्षरत दिखायी देते हैं। आम आदमी की निराशावादी वृत्ति का विरोध करते हुए कुंठित लोगों को खुद से बाहर निकलकर समाज विकास हेतु संघर्षरत रहने का संदेश देते हैं। दुष्यंत कुमार एक सजग और संघर्षशील ग़ज़लकार होने के नाते समाज जीवन के विभिन्न पक्ष और परिस्थितियों का इमानदार चित्रण करते हैं। उनकी ग़ज़लों में सामाजिक विकास के प्रति दृढ़ आस्था का स्वर सुनायी देता है। वे देश की आम जनता को असंतोष और व्यक्तिगत दुःख–दर्द से उबरकर समाज हित के लिए संघर्ष करने का आवाहन करते हैं। किसी भी स्थिति को ज्यों का त्यों स्वीकार करने की बजाय परिवर्तन के लिए विद्रोह का मार्ग अपनाने के लिए कहते हैं। जर्जर समाज को बदलने हेतु सामाजिक क्रांति का संदेश देते हैं। उनकी ग़ज़लों में सामाजिक विषमता के खिलाफ संघर्षी स्वर प्रकट हुआ है। दुष्यंत कुमार सामाजिक चेतना की भावना जगाने हेतु सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक जीवन की विसंगतियों पर कड़ा प्रहार करते हैं। उनकी ग़ज़लों में देश प्रेम की भावना स्पष्ट मुखरित होती है। वे अपनी ग़ज़लों में काल्पनिकता की बजाय मनुष्य जीवन की यथार्थता को महत्व देते हैं। उनकी ग़ज़लों में आशावादी दृष्टिकोन व्यक्त हुआ है। वे आम आदमी के जीवन की सच्चाई को महत्व देकर जन–जीवन के स्वप्न की पूर्ति हेतु संघर्षरत दिखायी देते हैं। दुष्यंत कुमार में जीवन की जटिलताओं की गहरी पकड़ होने के कारण सामान्य जन–जीवनी का विड़ंबनाओं को व्यापक रूप में प्रस्तुत करते हैं। दुष्यंत कुमार एक कालजयी ग़ज़लकार हैं। उनकी समग्र ग़ज़लों में सामाजिक चेतना दृष्टिगोचर होती है।

संदर्भ संकेत :

1) साहित्यलोक– संपादक मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर, पृष्ठ क्र. 128
2) वही
3) वही
4) हिंदी के प्रगतिशील और समकालीन कवि – डॉ. रणजीत, पृष्ठ क्र260
5) साहित्य सौरभ – संपादक मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर,पृष्ठ क्र. 168
6) हिंदी के प्रगतिशील और समकालीन कवि – डॉ. रणजीत,पृष्ठ क्र. 259
7) साहित्य सौरभ – संपादक मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर,पृष्ठ क्र. 168
8) वही
9) हिंदी के प्रगतिशील और समकालीन कवि – डॉ. रणजीत,पृष्ठ क्र. 259
10) साहित्य सौरभ – संपादक मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर,पृष्ठ क्र. 168
11) वही
12) हिंदी के प्रगतिशील और समकालीन कवि – डॉ. रणजीत, पृष्ठ क्र. 259